

सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों की स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन

शोध-निर्देशक

डॉ. संगीता आमटे

सह-प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान
रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

शोधार्थी

दशरथ सतीलांजेवार

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान
रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल

सारांश-

सिवनी जिला अपने शैक्षिक परिदृश्य में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच एक अनूठा अंतर प्रस्तुत करता है। जहाँ शहरी केंद्रों में शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच आम तौर पर ज्यादा होती है वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भारी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यह अध्याय सिवनी में महाविद्यालयों की स्थिति का गहन अध्ययन करता है और बुनियादी ढाँचे शैक्षणिक प्रदर्शन नामांकन प्रवृत्तियों और संकाय योग्यताओं सहित कई आयामों पर शहरी और ग्रामीण संस्थानों की तुलना करता है। इसका उद्देश्य दोनों क्षेत्रों की खूबियों और कमजोरियों की पहचान करना और यह समझना है कि ये अंतर जिले के समग्र शैक्षिक परिणामों को कैसे प्रभावित करते हैं।

प्रस्तावना-

सिवनी जिला शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में विभाजित है जिसमें जिला मुख्यालय सिवनी कस्बा मुख्य शहरी केंद्र है। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे कस्बे और कई गाँव शामिल हैं जिनकी कृषि अर्थव्यवस्था मुख्यतः खेती पर निर्भर है। जिले की आबादी मुख्यतः ग्रामीण है और अपेक्षाकृत कम शहरी आबादी सिवनी कस्बे के आसपास केंद्रित है। जनगणना के आंकड़ों के अनुसार लगभग 75 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है जिससे ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शहरी आबादी हालाँकि छोटी है बेहतर बुनियादी ढाँचे उन्नत शिक्षण संसाधनों और शैक्षिक अवसरों तक आसान पहुँच का लाभ उठाती है। यह जनसांख्यिकीय विभाजन शिक्षा प्रणाली को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि संसाधनों की उपलब्धता और उच्च शिक्षा तक पहुँच शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच काफी भिन्न होती है।

शोध प्रविधि-

शोध प्रविधि एक आधारभूत तत्व है जो अध्ययन की संरचना और दृष्टिकोण को निर्देशित करता है यह निर्धारित करता है कि डेटा कैसे एकत्र किया जाएगा उसका विश्लेषण किया जाएगा और उसकी व्याख्या की जाएगी। सिवनी जिले के महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं का उपयोग पर इस अध्ययन के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों शोध डिजाइनों को मिलाकर एक मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण चुना गया है। यह दृष्टिकोण उपयुक्त है क्योंकि यह प्रतिभागियों के अनुभवों और धारणाओं से प्राप्त अंतर्दृष्टि के साथ संख्यात्मक डेटा को एकीकृत करके सूचना सुविधा उपयोग की व्यापक समझ की अनुमति देता है।

सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं के उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन पहुंच और प्रभाव पर इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण-आधारित दृष्टिकोण प्राथमिक शोध पद्धति है जिसे गहन अन्वेषण के लिए केस स्टडी तत्व द्वारा पूरक बनाया गया है। इस मिश्रित शोध दृष्टिकोण को सर्वेक्षणों की व्यापक सामान्यता को केस स्टडी द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रासंगिक गहराई के साथ संतुलित करने के लिए चुना गया है जिससे डेटा संग्रह में प्रमाणीकरण सुनिश्चित होती है।

सर्वेक्षण दृष्टिकोण बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं एवं ग्रन्थपालों से डेटा एकत्र करने के लिए आवश्यक है जिसमें छात्र संकाय और ग्रन्थपाल शामिल हैं जो सीधे सूचना सुविधाओं से जुड़े हैं या उनसे प्रभावित हैं। सर्वेक्षण सूचना सुविधाओं के उपयोग के पैटर्न पहुंच संबंधी मुद्दों और विविध नमूना आबादी में संतुष्टि के स्तर पर मात्रात्मक डेटा कैप्चर करने में प्रभावी हैं। डिलमैन एट अल. के अनुसार सर्वेक्षण उन अध्ययनों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं जहां सांख्यिकीय विश्लेषण को सक्षम करने के लिए मानकीकृत डेटा संग्रह की आवश्यकता होती है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण सूचना सुविधा उपयोग की आवृत्ति सामान्य बाधाओं उपयोगकर्ता दक्षता स्तरों और समग्र संतुष्टि के बारे में जानकारी प्रदान करेगा जो रुझानों की पहचान करने और परिकल्पना परीक्षण का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सर्वेक्षणों के अलावा केस स्टडी दृष्टिकोण को शामिल करने से सिवनी जिले के भीतर स्थित ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालय की अधिक बारीकी से जांच करने में मदद मिलती है। यह तत्व चुनिंदा महाविद्यालय पुस्तकालयों पर ध्यान केंद्रित करेगा जिससे सूचना सुविधाओं के प्रबंधन में प्रत्येक पुस्तकालय की अनूठी चुनौतियों और रणनीतियों की अधिक विस्तृत खोज की जा सकेगी। केस स्टडी जटिल प्रासंगिक कारकों को उजागर करने के लिए उपयोगी हैं जो सूचना सुविधाओं के उपयोग को प्रभावित कर सकते हैं जैसे कि पुस्तकालय बजट की कमी बुनियादी ढांचे में अंतर या उपयोगकर्ताओं के बीच सूचना साक्षरता के विभिन्न स्तर।

अध्ययन के चर-

सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में स्थित महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं के उपयोग पहुंच और प्रभावशीलता की जांच करने में विश्लेषण की संरचना के लिए कई प्रमुख चर की पहचान की गई है। इन चरों में स्वतंत्र चर शामिल हैं जो अध्ययन के परिणामों को प्रभावित करने वाले कारक हैं और आश्रित चर जो मापे गए परिणामों या परिणामों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अध्ययन जनसंख्या और नमूनाकरण पद्धति-

अध्ययन की लक्षित आबादी में मध्यप्रदेश के सिवनी जिले के महाविद्यालयों के छात्र संकाय सदस्य और पुस्तकालय ग्रन्थपाल शामिल हैं। यह आबादी प्राथमिक हितधारकों का प्रतिनिधित्व करती है जो महाविद्यालय पुस्तकालयों के भीतर सूचना-संसाधनों से जुड़े हैं और उनका प्रबंधन करते हैं जो शैक्षणिक गतिविधियों का समर्थन करने में सूचना संसाधनों के उपयोग पैटर्न चुनौतियों और समग्र प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

नमूना आकार निर्धारण-

किसी भी शोध अध्ययन में नमूना चयन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है जिससे शोधकर्ता अपने अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार सही डेटा एकत्रित कर सकते हैं। इस शोध में सिवनी जिले के अंतर्गत आने वाले 19 महाविद्यालयों से प्रत्येक महाविद्यालय से 30 इस प्रकार कुल

570 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है। सिवनी जिले में स्थित ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों के कुल 19 ग्रन्थपालों को चयन किया गया है।

नमूना आकार-

इस अध्ययन में कुल 570 छात्रों का चयन किया गया था जिनमें से प्रत्येक महाविद्यालय से 30 छात्र-छात्राओं को चुना गया था। इस प्रकार नमूना चयन की कुल संख्या 570 थी जिसमें प्रत्येक महाविद्यालय के छात्रों का समान रूप से प्रतिनिधित्व किया गया था।

इसी प्रकार सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में स्थित कुल 19 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों का चयन किया गया है जो सम्पूर्ण जिले के महाविद्यालयों के पुस्तकालयों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शोध पत्र का उद्देश्य-

भाटिया एण्ड भाटिया के अनुसार-उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शोधार्थी उस नाविक के समान है जो यह नहीं जानता कि उसे कहाँ जाना है और शोधार्थी उस पतवार विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपड़े खाकर कहीं किनारे पर जा लगेगी। इसलिए शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालय के पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन (सिवनी जिले के विशेष संदर्भ में) हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं-

1. सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालय के पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं की स्थिति का अध्ययन।
2. सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में स्थित महाविद्यालयों में सूचना सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

सिवनी जिले के शहरी महाविद्यालय-

सिवनी के शहरी महाविद्यालय मुख्यतः सिवनी कस्बे में स्थित हैं जो जिले में प्रशासनिक व्यावसायिक और शैक्षिक गतिविधियों का केंद्रीय केंद्र है। इन महाविद्यालयों को अपने ग्रामीण समकक्षों की तुलना में बेहतर परिवहन सुविधा सरकारी अनुदान और बेहतर शैक्षिक बुनियादी

ढाँचे का लाभ मिलता है। शहरी महाविद्यालयों में आमतौर पर बड़ी छात्र संख्या अधिक अनुभवी संकाय सदस्य होते हैं और ये व्यापक शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करते हैं। ये महाविद्यालय प्रमुख विश्वविद्यालयों से संबद्ध हैं और जिले के शैक्षिक नेटवर्क का एक प्रमुख हिस्सा हैं। ये कला विज्ञान वाणिज्य और व्यावसायिक शिक्षा सहित विभिन्न विषयों में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

आधारभूत संरचना-

शहरी महाविद्यालय आमतौर पर आधुनिक इमारतों में स्थित होते हैं जिनमें सुव्यवस्थित कक्षाएँ विशाल प्रयोगशालाएँ पुस्तकालय और खेल सुविधाएँ होती हैं। इन संस्थानों में पाठ्येतर गतिविधियों के लिए भी समर्पित स्थान होते हैं जो छात्रों के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

आधुनिक कक्षाएँ और प्रयोगशालाएँ-

शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी डी.पी. चतुर्वेदी महाविद्यालय सिवनी जैसे महाविद्यालय अत्याधुनिक कक्षाएँ और प्रयोगशालाएँ प्रदान करते हैं जो विज्ञान से लेकर व्यावसायिक अध्ययन तक विविध विषयों की शिक्षा प्रदान करती हैं। इनके पास आधुनिक कंप्यूटर लैब और अन्य विशिष्ट उपकरण भी हैं जो सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाते हैं।

पुस्तकालय-

शहरी महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में भौतिक और डिजिटल दोनों तरह के संसाधन उपलब्ध हैं जिनमें पाठ्यपुस्तकें शैक्षणिक पत्रिकाएँ शोध पत्र और ई-पुस्तकें शामिल हैं। सिवनी महाविद्यालय और शहर के अन्य शहरी महाविद्यालय ऑनलाइन शैक्षणिक डेटाबेस की एक विस्तृत श्रृंखला तक आसान पहुँच प्रदान करते हैं जिससे छात्रों के लिए शोध के अवसर बढ़ते हैं।

खेलकूद और पाठ्येतर सुविधाएँ-

ये महाविद्यालय खेलकूद सुविधाएं प्रदान करते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं जिससे छात्रों को कक्षा के बाहर अपने शारीरिक रचनात्मक और सामाजिक कौशल को बढ़ाने में मदद मिलती है।

संकाय-

सिवनी के शहरी महाविद्यालयों को ग्रामीण महाविद्यालयों की तुलना में अधिक योग्य संकाय का लाभ मिलता है। कई संकाय सदस्यों के पास एम.ए./एम.एस.सी. जैसी उन्नत डिग्रियाँ हैं जो उन्हें उच्च स्तर का शैक्षणिक ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम बनाती हैं।

योग्य संकाय-

शासकीय पी.जी. महाविद्यालय शा. कन्या महाविद्यालय निर्मला देवी डिग्री महाविद्यालय जाम और एस.एस. चतुर्वेदी महाविद्यालय सिवनी जैसे महाविद्यालयों के संकाय सदस्य उच्च योग्यता प्राप्त हैं जिनमें से कई के पास अपने-अपने क्षेत्रों में स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की उपाधियाँ हैं। इससे उन्हें उच्च-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और शिक्षण के साथ-साथ शोध में संलग्न होने का अवसर मिलता है।

व्यावसायिक विकास-

शहरी महाविद्यालय कार्यशालाओं सम्मेलनों और कार्यक्रमों के माध्यम से निरंतर संकाय विकास के अवसर प्रदान करते हैं। इससे संकाय को नवीनतम शैक्षिक रुझानों और प्रथाओं से अपडेट रहने में मदद मिलती है।

छात्र सेवाएँ-

सिवनी के शहरी महाविद्यालय व्यापक छात्र सहायता सेवाएँ प्रदान करते हैं जो छात्रों के शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास के लिए आवश्यक हैं। इन सेवाओं में करियर परामर्श इंटरनशिप, प्लेसमेंट सहायता और मानसिक स्वास्थ्य सहायता शामिल हैं जो शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई को पाटती हैं।

तालिका 1

सिवनी में शहरी महाविद्यालयों का अवलोकन

कॉलेज का नाम	जगह	प्रस्तावित पाठ्यक्रम	आधारभूत संरचना	संकाय योग्यताएं	छात्र नामांकन
शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी	सिवनी शहर	कला विज्ञान वाणिज्य व्यावसायिक	अच्छी तरह से रखरखाव वाली आधुनिक प्रयोगशालाएँ	एम.ए. एम.एससी.	+1200
शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी	सिवनी शहर	कला वाणिज्य विज्ञान	विशाल कक्षाएँ पुस्तकालय	एम.ए.	+1000

शास. विधि महाविद्यालय सिवनी	सिवनी शहर	विज्ञान वाणिज्य व्यावसायिक	कंप्यूटर लैब खेल सुविधाएं	एम.एससी. एम.ए.	+800
डी.पी. चतुर्वेदी महाविद्यालय सिवनी	सिवनी शहर	कला विज्ञान वाणिज्य	विशाल आधुनिक सुविधाएं	एम.ए. एम.एससी.	+1000
निर्मला देवी डिग्री महाविद्यालय जाम सिवनी	सिवनी शहर	कला विज्ञान वाणिज्य	अच्छी तरह से अनुरक्षित पुस्तकालय	एम.ए. एम.एससी.	+800
शिवम विधि महाविद्यालय सिवनी	सिवनी शहर	कानून	आधुनिक बुनियादी ढाँचा	एम.ए.	+500
एस.एस. चतुर्वेदी महाविद्यालय सिवनी	सिवनी शहर	कला वाणिज्य व्यावसायिक	विशाल कक्षाएँ खेल	एम.ए. एम.एससी.	+600

ग्लोबल विधि	सिवनी	कानून	अच्छी तरह से	एम.ए.	+350
महाविद्यालय	शहर		सुसज्जित कक्षाएँ		
सिवनी					

स्रोत शोधकर्ता द्वारा संकलित

सिवनी के शहरी महाविद्यालय बुनियादी ढाँचे योग्य संकाय और छात्र सेवाओं के मामले में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करते हैं। वे अपने विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों उन्नत सुविधाओं की उपलब्धता और प्रदान की जाने वाली सहायक सेवाओं के कारण बड़ी संख्या में छात्रों को आकर्षित करने में सक्षम हैं। ये महाविद्यालय सिवनी जिले के शिक्षा परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं और छात्रों को शैक्षणिक और व्यावसायिक दोनों ही क्षेत्रों में सफलता के अवसर प्रदान करते हैं।

सिवनी जिले के ग्रामीण महाविद्यालय-

शहरी महाविद्यालयों के विपरीत सिवनी जिले के ग्रामीण महाविद्यालयों को अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये महाविद्यालय आमतौर पर दूरदराज के गांवों और छोटे कस्बों में स्थित होते हैं जिससे उन छात्रों के लिए ये कम सुलभ हो जाते हैं जिन्हें कक्षाओं में भाग लेने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। बुनियादी ढाँचे की कमी अपर्याप्त धन और योग्य संकाय सदस्यों की कमी ग्रामीण महाविद्यालयों के सामने आने वाली कुछ प्रमुख बाधाएँ हैं।

आधारभूत संरचना-

सिवनी के ग्रामीण महाविद्यालय आमतौर पर पुरानी इमारतों में स्थित हैं जो खस्ताहाल हैं। इनमें से कई महाविद्यालय अपर्याप्त कक्षाओं सीमित पुस्तकालय संसाधनों और आधुनिक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) सुविधाओं की कमी या बिल्कुल भी पहुँच से जूझ रहे हैं। कंप्यूटर लैब उपलब्ध होने पर भी वे अक्सर पुरानी और खराब सुविधाओं वाली होती हैं।

पुरानी इमारतें और सीमित सुविधाएँ-

शास. महाविद्यालय कुरई शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय केवलारी एवं आदर्श महाविद्यालय पलारी जिला-सिवनी जैसे महाविद्यालय पुरानी जर्जर इमारतों में स्थित हैं और उनके संसाधन सीमित हैं। कंप्यूटर लैब स्मार्ट क्लासरूम और पर्याप्त शैक्षणिक संसाधनों वाले पुस्तकालय जैसी आधुनिक सुविधाओं का अभाव छात्रों को नुकसान पहुँचाता है।

आईसीटी और आधुनिक शिक्षण उपकरणों का अभाव-

ऑनलाइन डेटाबेस ई-बुक्स और डिजिटल जर्नल जैसे डिजिटल संसाधनों तक पहुँच बहुत कम है और आईसीटी सुविधाएँ अक्सर पुरानी या निष्क्रिय होती हैं। इससे छात्रों की आधुनिक शोध करने और नवीनतम शैक्षणिक सामग्री तक पहुँचने की क्षमता में बाधा आती है।

संकाय-

ग्रामीण महाविद्यालयों में शिक्षकों की गुणवत्ता आम तौर पर शहरी महाविद्यालयों की तुलना में कम होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कई शिक्षकों के पास केवल स्नातक या स्नातकोत्तर की डिग्री होती है और आर्थिक तंगी के कारण उन्हें नियमित व्यावसायिक विकास के अवसर भी नहीं मिल पाते।

कम योग्यता और सीमित प्रशिक्षण-

शास. महाविद्यालय कुरई जिला-सिवनी एवं शास. महाविद्यालय घंसौर जैसे ग्रामीण महाविद्यालयों के कई अतिथि शिक्षकों के पास केवल एम.ए. की डिग्री होती है और उनके पास अपने विषय क्षेत्रों में विशिष्ट योग्यताएँ नहीं होती हैं। विशेषज्ञता और उन्नत शिक्षण विधियों के ज्ञान की कमी प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

स्टाफ की कमी और बहु-विषय शिक्षण-

ग्रामीण महाविद्यालयों में अक्सर स्टाफ की कमी होती है और संकाय सदस्यों को कई विषय पढ़ाने पड़ते हैं। इससे उनका ध्यान भटक सकता है और छात्रों के लिए अपने चुने हुए क्षेत्र में विशिष्ट शिक्षा का पूरा लाभ प्राप्त करना मुश्किल हो सकता है।

पाठ्यक्रम की पेशकश-

शहरी महाविद्यालयों की तुलना में ग्रामीण महाविद्यालय कम पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। हालाँकि कुछ महाविद्यालय कला विज्ञान और वाणिज्य में बुनियादी स्नातक कार्यक्रम प्रदान करते हैं लेकिन कई महाविद्यालय विशिष्ट या उन्नत पाठ्यक्रम प्रदान नहीं करते हैं जिससे छात्रों की शैक्षिक और करियर संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं।

सीमित पाठ्यक्रम विकल्प-

शा. महाविद्यालय बरघाट शास. महाविद्यालय छपारा एवं शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय केवलारी जिला-सिवनी जैसे महाविद्यालय कम कार्यक्रम प्रदान करते हैं और इंजीनियरिंग कानून या व्यावसायिक अध्ययन जैसे क्षेत्रों में विशेष पाठ्यक्रम प्रदान नहीं करते हैं जिससे छात्रों के लिए महाविद्यालय से सीधे कुछ कैरियर पथों का अनुसरण करना मुश्किल हो जाता है।

बुनियादी स्नातक कार्यक्रम-

ग्रामीण महाविद्यालयों में पेश किए जाने वाले अधिकांश पाठ्यक्रम कला विज्ञान और वाणिज्य में बुनियादी स्नातक कार्यक्रमों पर केंद्रित होते हैं जो उन्नत डिग्री या विशिष्ट विषय प्रदान नहीं करते हैं।

छात्र सेवाएँ-

ग्रामीण महाविद्यालयों में अक्सर शहरी महाविद्यालयों जैसी व्यापक छात्र सेवाओं का अभाव होता है। करियर परामर्श इंटरनशिप प्लेसमेंट सहायता और मानसिक स्वास्थ्य सहायता जैसी सेवाएँ या तो न्यूनतम होती हैं या बिल्कुल नहीं होतीं।

छात्र सहायता सेवाओं का अभाव-

शहरी महाविद्यालयों के विपरीत ग्रामीण संस्थान आमतौर पर कैरियर मार्गदर्शन इंटरनशिप या नौकरी प्लेसमेंट सेवाएं प्रदान नहीं करते हैं जिससे छात्रों के लिए शिक्षा से रोजगार में संक्रमण करना कठिन हो जाता है।

तालिका

सिवनी में ग्रामीण महाविद्यालयों का अवलोकन

कॉलेज का नाम	जगह	प्रस्तावित पाठ्यक्रम	आधारभूत संरचना	संकाय योग्यताएं	छात्र नामांकन
स्वामी विवेकानन्द शा. महाविद्यालय लखनादौन	लखनादौन गाँव	कला विज्ञान	बुनियादी सुविधाएं पुरानी इमारत	एम.ए. बी.ए.	+400

शा. महाविद्यालय बरघाट जिला-सिवनी	बरघाट गाँव	कला वाणिज्य	छोटी कक्षाएँ पुरानी प्रयोगशालाएँ	एम.ए. बी.ए.	+350
शास. महाविद्यालय छपारा	छपारा गाँव	कला विज्ञान वाणिज्य	खराब स्थिति सीमित सुविधाएँ	एम.ए. एम.एससी.	+300
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय केवलारी	केवलारी गाँव	कला वाणिज्य	छोटा पुस्तकालय सीमित स्थान	एम.ए. बी.ए.	+250
शास. महाविद्यालय घंसौर	घंसौर गाँव	कला विज्ञान	खराब बुनियादी ढांचा	एम.ए. बी.ए.	+200
शास. महाविद्यालय कुरई जिला-सिवनी	कुरई गाँव	कला वाणिज्य	बुनियादी पुरानी इमारत	एम.ए. बी.ए.	+400
विवेकानन्द कन्या महाविद्यालय खुरसरा	खुरसरा गाँव	कला वाणिज्य	सीमित सुविधाएँ छोटा पुस्तकालय	एम.ए. बी.ए.	+350

महाजन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय अरंडिया	अरंडिया गाँव	कला वाणिज्य	छोटा पुस्तकालय बुनियादी सुविधाएँ	एम.ए. बी.ए.	+200
आदर्श महाविद्यालय पलारी	पलारी गाँव	कला विज्ञान वाणिज्य	सीमित सुविधाएं	एम.ए. बी.ए.	+300
अनुराग महाविद्यालय ऑफ एजुकेशन पलारी	पलारी गाँव	शिक्षा	बुनियादी सुविधाएं छोटा पुस्तकालय	शिक्षा	+250
महाकोशल विज्ञान महाविद्यालय छपारा	छपारा गाँव	विज्ञान	खराब हालत पुरानी इमारत	एम.एससी. एम.ए.	+250

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित

सिवनी जिले के शहरी और ग्रामीण महाविद्यालयों के बीच का अंतर ग्रामीण महाविद्यालयों के सामने आने वाली चुनौतियों को उजागर करता है। जहाँ शहरी महाविद्यालयों में बेहतर बुनियादी ढाँचा अधिक योग्य संकाय और पाठ्यक्रमों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है वहीं ग्रामीण महाविद्यालयों को पुरानी सुविधाओं सीमित संसाधनों और कम शैक्षणिक कार्यक्रमों से जूझना पड़ता है। इन गंभीर चुनौतियों के बावजूद ग्रामीण महाविद्यालय दूर-दराज के इलाकों में शिक्षा प्रदान करते हुए आबादी के एक बड़े हिस्से की सेवा कर रहे हैं। हालाँकि बुनियादी ढाँचे संकाय की गुणवत्ता और छात्र सेवाओं में असमानताओं को दूर करना यह सुनिश्चित करने के

लिए आवश्यक है कि ग्रामीण छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच मिले जिससे सिवनी जिले में शैक्षिक अंतर को कम करने में मदद मिल सकती है।

निष्कर्ष-

शहरी महाविद्यालयों की संख्या 42% (8 महाविद्यालय) है जबकि ग्रामीण महाविद्यालयों की संख्या 58% (11 महाविद्यालय) है। शहरी महाविद्यालयों में अधिकतर मुद्रित सामग्री (25%) और इलेक्ट्रॉनिक सामग्री (37.5%) पाई जाती है। ग्रामीण महाविद्यालयों में मिश्रित सामग्री (27.27%) और अस्पष्ट सामग्री (18.18%) की संख्या अधिक है। शहरी महाविद्यालयों में 35% महाविद्यालयों के पास 20000 से 50000 तक किताबें हैं जबकि ग्रामीण महाविद्यालयों में 27.27% महाविद्यालयों के पास एक लाख से अधिक किताबें हैं।

शहरी महाविद्यालयों में 62.5% विद्यार्थी संतुष्ट हैं जबकि ग्रामीण महाविद्यालयों में 54.55% विद्यार्थी संतुष्ट हैं। शहरी महाविद्यालयों में 75% और ग्रामीण महाविद्यालयों में 63.64% पुस्तकालय उपयोगकर्ता मानक के अनुसार पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

शहरी महाविद्यालयों में 37.5% महाविद्यालयों ने पुस्तकें प्रकाशकों से प्राप्त की हैं जबकि ग्रामीण महाविद्यालयों में 45.45% महाविद्यालयों ने ऐसा किया है। शहरी महाविद्यालयों में सरकारी अनुदान से अधिक पुस्तक क्रय किया जाता है (87.5%) जबकि ग्रामीण महाविद्यालयों में 54.55% महाविद्यालयों का बजट सरकारी अनुदान से आता है।

शहरी महाविद्यालयों में 50% विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं जबकि ग्रामीण महाविद्यालयों में केवल 44.4% विद्यार्थी इसका उपयोग करते हैं। शहरी महाविद्यालयों में 71.4% विद्यार्थी संतुष्ट हैं जबकि ग्रामीण महाविद्यालयों में केवल 41.1% विद्यार्थी संतुष्ट हैं। शहरी महाविद्यालयों में 75% पुस्तकालय स्वचालित हैं जबकि ग्रामीण महाविद्यालयों में 72.73% पुस्तकालय स्वचालित हैं।

संदर्भ-

1. मधुसूदन एम. (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग।
2. मणि एम. शाहुल हमीद एस. थिरुमगल ए. और लाइब्रेरियन एटी आईसीटी ज्ञान पुस्तकालय अवसंरचना सुविधाओं का छात्रों के ई-संसाधनों के उपयोग पर प्रभाव: एक अनुभवजन्य अध्ययन।
2. सिंह के. (पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के छात्रों में ई-संसाधनों के बारे में जागरूकता और उपयोग: एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन
3. पांडा एस. (स्कोपस डेटाबेस का उपयोग करके पुस्तकालयों में ई-संसाधनों के उपयोग का अनुसंधान प्रवृत्ति विश्लेषण। भारत के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-संसाधन
4. मिश्रा एच.के. और ओझा आर. (आधुनिक शैक्षणिक पुस्तकालयों पर ई-संसाधनों का प्रभाव। रिसर्च स्पेक्ट्रा
5. आशा के.ए. (शैक्षणिक और शोध कार्यों में छात्रों के बीच ई-संसाधनों के बारे में जागरूकता और उपयोग पर अध्ययन। इंडियन रिसर्च जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन

□□□